ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 119-122
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

दूधनाथ सिंह के कथा साहित्य में राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

1. चन्दन सिंह 2. ललित कुमार सिंह
1. शोध अध्येता 2. एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग, म.गाँ.चि.ग्रा.वि.वि.,चित्रकूट, सतना (म.प्र.) भारत

Received- 08.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 15.05.2019 E-mail: -vishnucktd@gmail.com

सारांश : ***दूधनाथ सिंह बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे। साठोत्तरी पीढ़ी के ऐसे रचनाकार जिसने कहानी, कविता नाटक, संस्मरण, उपन्यास, आलोचना विधाओं में जो भी लिखा अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने लेखन में प्रेम दाम्पत्य और यौन सम्बन्धों के छल–छद्म का उपहास किया तथा उनके साहित्य में व्यक्तित्व का प्रभाव परिलक्षित होता है। इनके व्यक्तित्व की विकासशीलता में स्थल, काल, माहौल का विशेष महत्व रहा है।***

साहित्यकार जिस वातावरण में पला, विकसित हुआ था जिस समाज में रहा हो उसका प्रभाव निश्चित ही उसके साहित्य में दिखाई देता है। साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब ही उनकी रचनाधर्मिता में दिखाई देता है। साहित्यकार का साहित्य उसके जीवन का प्रतिबिम्ब होता है। दूधनाथ सिंह का व्यक्तित्व भी इसी कोटि में आता है। दूधनाथ सिंह जी एक प्रबुद्ध प्राध्यापक, समीक्षक, कवि, कहानीकार और सबसे बढ़कर एक निराले व्यक्तित्व के स्वामी रहे हैं।

कुंजीभूत शब्द– बहुमुखी प्रतिभा, रचनाकार, साठोत्तरी पीढ़ी, कहानी, कविता नाटक, संस्मरण, उपन्यास, आलोचना।

दूधनाथ सिंह जी की कहानियों, उपन्यासों और नाटकों में आज आम आदमी की बेबसी, यथार्थ, अनुभव की कड़वाहट तथा जीवन के विविध पहलुओं, आदमी द्वारा आदमियत की चुनौती मनुष्य के सौभाग्य–दुर्भाग्य, पुरुषों की अर्थलोलुपता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, समाज में फैले भ्रष्टाचार और आर्थिक शोषण आदि जीवन के कटु–मधुर, विविध अनुभवों का बखूबी से निरूपण किया गया है।

नमोअन्धकारं, निष्कासन और आखिरी कलाम जैसे बेहद चर्चित उपन्यासों के सर्जक हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार दूधनाथ सिंह अब हमारे बीच नहीं रहे, इनके इन उपन्यासों में आखिरी कलाम जो अयोध्या में 6 दिसम्बर 1992 को घटित बाबरी मस्जिद के ध्वंस की त्रासदी को लेकर रचा गया था। अंततः उनकी पहचान ही बन गया।

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य– साठोत्तरी पीढ़ी के रचनाकार दूधनाथ सिंह के उपन्यास राजनीतिक दृष्टि से पूर्णता सफल रहे हैं, परन्तु दूधनाथ की कहानियों में भी राजनीतिक दलबदल, भ्रष्टाचार, घूसखोरी और तत्कालीन राजनीति के उदाहरण सर्वत्र विद्यमान हैं। लेखक दूधनाथ सिंह जी अपनी कहानियों के माध्यम से राजनीति में फैले भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी आदि का स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। मितवा मंत्री बनने के बाद लोगों का काम बिना लेन–देन के कभी नहीं करते हैं। मंत्री जी हर प्रकार के रुपये को पवित्र मानते हैं। कहानी में जब वे एक बौने से पैसे लेते हैं तब बौना अपनी जेब में हाथ डालता है, नोटों की गड्डी निकालता है, दिखाता है फिर बोलता है मैली हैं। "ठीक है, ठीक है.... पैसा कहीं से भी आये इधर आते ही पवित्र हो जाता है।" मंत्री जी कहते हैं।

रचनाकार दूधनाथ सिंह की कहानी संग्रह सुखान्त और उत्सव भी राजनीतिक से भरी पड़ी हैं उत्सव कहानी में मृतक सेवा के संस्थान के चित्र को प्रस्तुत किया है। शहर के रईस आदमी की मृत्यु हो जाने पर शोक प्रकट करने के लिए व्यवस्था की जाती है। शहर के प्रसिद्ध चोर बाजारिए गुण्डें तथा पुलिस देखने पहुँचते हैं, जिससे पुलिस के भ्रष्टाचार पर कथा नायक व्यंग्य करता हुआ कहता है–शहर के कुछ प्रसिद्ध जुआरी और चोर बाजारिए, उन्हें घेर कर बैठे थे और पछता रहे थे। रईस साहब के यहाँ जुए का निर्यात अड्डा था। जहाँ पर पुलिस भी साथ–साथ बैठकर जुआ खेलती और रईस साहब के प्रति अपना कृतज्ञता प्रकट करती सुबह–सवेरे चली जाती।'

इस प्रकार दूधनाथ सिंह जी के कहानी संसार में अन्यान्या राजनीतिक परिस्थितियों का यथार्थ परक अंकन हुआ है। उत्सव कहानी में लेखक ने समाज में उत्पन्न राजनैतिक वातावरण एवं धर्म पर किस प्रकार की बहस होती है उसका यथार्थ चित्रण किया है। गलत कार्य करने वालों का सामाजिक व्यक्ति जैसे तिरस्कार करते हैं उसका यथार्थ अंकन है। अन्त में इन सभी समाज के राजनेताओं का क्या हश्र होता है। उसका चित्रण अत्यंत सजीव है।

"गुरू जी ने आँखें उठायी और एक अजब सी भयभीत और याचना भरी निगाहों से भीड़ की ओर देखा फिर उन्होंने आंखें बन्द कर ली। उसे लगा कर खूंखार भीड़ उनके इर्द–गिर्द घेरा कस रही है। खूंखार, जिन्दा, गुस्सैल और फड़फड़ाती हुई भीड़।"

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

गुप्तदान कहनी में दूधनाथ सिंह ने तत्कालीन राजनैतिक बुराईयों को उजागर किया है। वर्तमान राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा देश के सफेदपोश मंत्री किस प्रकार समाज का शोषण कर रहे हैं, उसका सजीव चित्रण किया गया है।

सिर्फ दो लाख मंतिरीजी घूम जाते हैं, 'इतने में तो हमारी जरसी गऊ माता का भूषा भी नहीं आयेगा।'

'सरकार फिर हमें क्या बचेगा?'

तुम्हें क्या बचेगा? क्या बचेगा? मंतिरीजी फनफनाकर एबाउट टर्न होते हैं, इतना बड़ा ठेका दे रहे हैं। इतनी मिलावट करते हो। लोगों की जानें लेते हों। गुण्डे पालते हो। रखैलें रखते हो। ऊपर से कहते हो, हमें क्या बचेगा।..... जाओ हिंया से।''

गुप्तदान कहानी नेताओं की वास्तविकता को उजागर करती कहानी है, जिसमें पाण्डेय जी और मीता की मित्रता को अटूट दिखाया है चाहे कैसी भी परिस्थिति हो। दूधनाथ सिंह के उपन्यास निष्कासन में आरम्भ से अंत तक राजनीति का प्रचार–प्रसार है। यहाँ तक कि उपन्यास के प्रमुख पात्र मनोज पाण्डेय और अधीक्षिका यानी मैम के प्रति शार्दूल विक्रम सिंह भी राजनीति से सम्बन्ध रखते हैं। नन्हें लाल खटिक जैसे पात्रों के माध्यम से लेखक ने राजनीतिक भ्रष्टाचार, घूसखोरी एवं राजनीतिक दल का यथार्थ चित्रण उपन्यास में किया है। उपन्यास की कथा के माध्यम से लेखक ने सोई हुई जनता को जगाने का प्रयास किया है। उपन्यास की नायिका लड़की न्याय की मांग करती हर एक के पास जाती है, कुलपति के पास, महासचिव के पास, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, अनुसूचित जाति–जनजाति आयोग के चेयरमैन के पास, सांसद, पूर्वमंत्री, नन्हेलाल खटिक आदि सब नेताओं के पास जाने पर उसे न्याय नहीं मिलता और अंत में नाराज होकर लड़की आमहत्या कर लेती है। वह नाकाम इसलिए होती है कि अपनी परेशानी को वह सामाजिक परेशानी में तब्दील नहीं कर पाती। वह हर जगह से हार कर आत्महत्या का सहारा ले लेती है।

''जो हारता है, वह न्याय के पक्ष में नहीं होता।' साहसा एक दिन लड़की ने मनोज के साथ टिफिन खाते हुए कहा।

'कोई जरूरी नहीं।' मनोज ने कहा।

'नियम कानून से, और दुनिया की नजर में और इसी तरह जीते हुए जीवन में।' लड़की ने कहा।

'कोई नियम नहीं' मनोज फिनफिनाया, 'इस दुनिया का कोई नियम नहीं, और इसीलिए तो लड़ाई है..... जंग है, बलिदान है.... इसलिए 'किसीलिए?' लड़की मुस्करा रही थी।

तभी दरवाजे पर ठक्–ठक् हुई।
'कौन?' मनोज ने आवाज दी।
'अक्सर होती है।' लड़की ने कहा।
'रास्ते–राहत!' बाहर कोई गली में चिल्लाया।''

उसकी आत्महत्या पाठक को वर्तमान माहौल और उसमें चल रहे राजनीतिक और जनतांत्रिक क्रिया–कलापों के प्रति एक आक्रोश के साथ चिंतित कराती है। यह उपन्यास पाठकों को सोचने के लिए बाध्य किये बिना नहीं रहता। साथ ही उपन्यास का अंत सचमुच त्रासदीपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी ही नहीं बल्कि मर्मभेदक किया हुआ परिलक्षित होता है। इन्हीं महत्वपूर्ण बातों के कारण यह उपन्यास हिन्दी साहित्य जगत में चर्चित रहा है।

दूधनाथ सिंह जी का 'आखिरी कलाम' उपन्यास बाबरी मस्जिद के विध्वंस, धार्मिक पाखण्ड, ढकोसला तथा धर्म के आड़ में छिपी राजनीति को लेकर लिखा गया यथार्थ तथा मार्मिक उपन्यास है। इसके बारे में यह कहना उचित है कि इस उपन्यास में राजनीतिक उठापटक, अवसरवादी चालाकियों के साथ मार्क्सवादी विचारों के अवितरत प्रवाह की समग्र रूप में पकड़ने का एक महत प्रयास किया गया है। स्वयं दूधनाथ जी इस उपन्यास के बारे में लिखते हैं ''दरअसल यह कृति धर्म, संस्कृति और राजनीति के अन्तर छल का उद्घाटित युक्त है।''

भारतीय राजनीति की यह एक बहुत भीतरी परिधि है, जहाँ 'सर्वानुमति का अवसरवाद' फल–फूल रहा है। वहाँ एक आधुनिक बर्बरता की चक्करदार आहट है, ऊपर से सब कुछ शुद्ध–बुद्ध, परम पवित्र कर्मकाण्डी, एकान्तिक लेकिन सार्वजनिक, गहन लुभावन लेकिन उबकाई से भरा हुआ, आक्सीजनयुक्त लेकिन दमघोटूं उत्तेजक लेकिन प्रशांत सारे छल एक साथ। ऐसे ही संविधान सम्मत जीवन पर इस उपन्यास में अनपेक्षित किन्तु वैध टिप्पणियां है।

''सभी भारतीय कस्बों की तरह अयोध्या भी एक धुँआया हुआ मटमैला कस्बा है। वैसा ही बदसूरत। संकरी बदबूदार गलियाँ, धुमैलेघर जिनमें से संझा सुबह संडास की सीली, गहरी दुर्गन्ध निकलती है। वैसे ही धुंआ–धुआ, चेहराविहीन, हड्डे लोग, जैसे आमतौर पर हमारे देश और देहातों में होते हैं। यानी अयोध्या बिल्कुल वैसा ही है, जैसे सभी भारतीय कस्बे शहर का उच्छिष्ट और गांवों का वमन।'' 'आखिरी कलाम' उपन्यास हमारे अतीत और वर्तमान की एक नई 'पोलेमिक्स' है। इंसाफ की इच्छा का एक दुखद–द्वंद्वात्मक संवाद है, जो अपने लोगों और अपनी जनता को ही संबोधित है। प्रस्तुत उपन्यास में दर्शायी गयी समस्या का आखिरी तक हल नहीं हुआ, क्योंकि वह एक ज्वलंत समस्या है और उसका हल होना सद्यः स्थिति में तो असंभव है। इसीलिए दूधनाथ जी ने जायसी की काव्यरचना 'आखिरी कालम' की कुछ पंक्तियाँ आरम्भ में ही रखी है।

''रतिक सपन जागि पछिताना।

ना जाने कब होई बिहाना।''

उक्त पंक्तियों से ही उपन्यास की गरिमा का पता चलते नहीं रहता इन सारी विशेषताओं के कारण ही यह उपन्यास हिन्दी साहित्य में अपनी अमीर छाप छोड़े बिना नहीं रहता।

दूधनाथ सिंह जी का तीसरा उपन्यास 'नमो अंधकार' है, जिसमें पचास साल के राजनीतिक जीवन पर एक प्रमुख टिप्पणी मात्र माना जाता है। इस उपन्यास में कथा पात्र गुरू जी कथा नायक को उसकी नाकामयाबी और नैतिक चरित्र को लेकर निन्दा, भर्त्सना करते हैं और शिष्य को भदोही जाने को कहते हैं। भदोही में सामान्त परिवारों द्वारा बालकों का आर्थिक शोषण किया जा रहा है। अर्थात् इस उपन्यास को ऐसी समस्याओं पर कठोर आघात माना जाता है।

राजनीति का आरमभ से ही किसी भी देश के समाज की निर्मित और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत में प्राचीन काल में राजनीति के लिए राजधर्म शब्द प्रचलित थी। आज भी राजनीति की समाज और देश ही नहीं वरन् कला, धर्म, और साहित्य इत्यादि अन्य क्षेत्रों में आवश्यक माना जाता है।

डॉ. शुभलक्ष्मी अपने एक ग्रन्थ में राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में राजनीति शीर्षक के अन्तर्गत लिखती है–''राजनीति से अभिप्राय है देश की शासन सम्बंधी विचारधाराएँ। इसके अन्तर्गत राष्ट्र का सुनियोजित निर्माण उसकी उन्नति हेतु प्रयत्न एवं उसकी सुरक्षा आदि तत्व समाविष्ट है। 'राष्ट्रीय चेतना' के संदर्भ में राजनीति का क्षेत्र व्यापक हो जाता है। इससे देश की बहिर्मुखी उन्नति के अतिरिक्त उसकी आन्तरिक शक्ति को सुदृढ़ करने में सहायक तत्व भी सम्मिलित हो जाते हैं।''

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य– दूधनाथ सिंह ने अपने जीवनकाल में जो कुछ भी देखा और अनुभव किया उसे शब्दों के माध्यम से पन्नों पर उकेर दिया।

उन्होंने अपनी रचनाओं में हमेशा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समस्याओं को केन्द्र में रखा और इस प्रक्रिया से उनकी लेखनी हमेशा समाज के शोषित वर्गों के साथ रही है इसलिए उनकी हर कहानी तत्कालीन जीवन के यथार्थ का उद्घाटन करती है और इनको अपने समकालीन कथाकारों से अलग करती है।

संस्कृति का सम्बंध समाज और धर्म दोनों से होते हैं। समाज और धर्म के अन्दर जो भी बदलाव आते हैं उसका असर संस्कृति पर पड़ता है। अतः यह कहना भी गलत नहीं होगा कि जो परिवर्तन तथा नए मूल्य समाज तथा धर्म स्वीकारता है वहीं मूल्य संस्कृति में दिखाई देते हैं।

आजादी के बाद भूमण्डलीकरण, शिक्षा, विज्ञान के प्रचार–प्रसार के कारण एक मिली जुली मिश्रित संस्कृति का उदय हुआ है। पश्चिमी संस्कृति का गहरा प्रभाव बढ़ा है। खाने–पीने की व्यवस्था बदली उसमें नयापन आया। लोगों के रहन–सहन में भी परिवर्तन आया। लोगों एक–दूसरे की देखादेखी में जीवन निर्वाह करने लगे। लोग अपनी सुविधा को पूर्ण करने के लिए छोटे रास्ते अपनाकर कम समय में धनवान बनना, भ्रष्टाचार, अनीति आदि में बढ़ावा हुआ।

संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार अस्तित्व में आने लगे हैं, जिससे परिवार पति–पत्नी एवं बच्चे तक सीमित हो गए। समाज का उच्च एवं मध्यवर्ग अडम्बर, भौतिकता, कृत्रिमा और विलासिता की प्रवृत्तियों से ग्रस्त हुआ तथा नैतिक मूल्यों में गिरावट आयी। भारतीय सांस्कृतिक विरासत में एकता की भावना पर चोट पहुंची। लोगों का आकर्षक सांस्कृतिक विरासत के प्रति कम हुआ।

समाज को पाश्चात्य देशों की निकटता ने प्रभावित किया। आधुनिकता फैशन के नाम पर विदेशी संस्कृति का अन्धानुकरण किया जाने लगा और हमारे संस्कृति के मूलतत्व समन्वय एवं सहिष्णुता की भावना क्षीण होने लगी थी प्राचीन मूल्यों से टकराकर नवीन सांस्कृतिक मूल्य उद्घाटित हुए जो कि स्वाभाविक था, क्योंकि ''जीवन के साथ–साथ संस्कृति बदलती रहती है। जीवन स्थिर और जड़ नहीं है। इसीलिए संस्कृति भी जड़ और स्थिर नहीं है। समाज के आर्थिक और सामाजिक जीवन में परिवर्तन होते रहते हैं और साथ ही साथ सांस्कृतिक जीवन भी बदलता रहता है।''

लोक जीवन व आंचलिकता पर ही आधारित दूधनाथ सिंह की 'रेत' कहानी में क्षेत्रीय लोगों के रहन–सहन व रीति–रिवाजों का निरूपण हुआ है। 'डोम' के विवाह में जब तक वर या वधू पक्ष में किसी का कपार नहीं फूटता तब तक विवाह की शुभ रस्म नहीं होती है इस मर्यादा व परम्परा को पालने के लिए शीलहुत डोम छल का सहारा लेकर ठाकुर के आदमियों को डोम बताता है, लेकिन परम्परा का निर्वहन पूर्ण रूप से करता है।

''जो कुछ लगेगा बियाह में हम सब देंगे। बाकी गाँव बेचने की बाते कही तो लउर का छुर मुँह में डालि के पेट चीर देंगे। समझे कि नाही? चौधरी साहब ने मूँछों पर ताव दिया।''

रेत कहानी के अन्तर्गत दूधनाथ सिंह जी ने सामन्तवादियों के रहन–सहन एवं सामाजिक स्थिति का उल्लेख किया है। लेखक दूधनाथ सिंह के कहानी संग्रह 'धर्मक्षेत्रे–कुरुक्षेत्रे' की कहानी में संवाद शैली के द्वारा लेखक ने तत्कालीन समाज और संस्कृति को अपनी रचना के माध्यम से साकार कर दिये हैं। दूधनाथ सिंह के कहानी

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

संग्रह 'धर्मक्षेत्रे–कुरुक्षेत्रे' में सिऊ महतो और कोड़बाजों के द्वारा बिहार क्षेत्र की समाज और संस्कृति को हमारे सामने प्रस्तुत करने में पूर्णरूप से सक्षम होते हैं।

''कानों में करुतेल डाल रखा है। उस औरत का घूँघट खींच दिया।

औरत एक दम बेबस, उसे आँखे उठाकर देखने लगी 'ओहोह! सिऊ वहाँ से हट गया।'

'ठंडी नहीं हो सकती।' उसने कोडबाजों से कहा।

'कोई बात नहीं मॅहतो! एक कोडबाज ने कहा', 'हमने समझ लिया, माल अभी फंसा है।'

'आप लोग जाँय।' सिऊ लाचार होकर बोला।

'नहीं, सउदा हो जाय मॅहतो।' कोड़बाज बोला।

'कैसे हो जाय?' सिऊ मॅहतो की समझ में नहीं आया।

'कैसे क्या, बौना–बट्टा हो जाय। जब इस लायक होगी, ले जायेंगे।'

'एक ठाकुर साहेब का घर बसाना है। माल परफेक्ट है।' कोड़बाज के दूसरे साथी ने कहा।''

प्रस्तुत लेखक अपने समाज से जुड़ा हुआ होता है, समाज में जो भी घटनायें घटती हैं उन घटनाओं को लेखक ज्यों का त्यों उतार देता है। दूधनाथ सिंह जी के कथा साहित्य में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थिति का अंकन देखने को मिलता है। लेखक वही लिखता है जो कि देखता है। लेखक की रचना को पढ़कर ही उसे व्यक्तित्व, मानसिकता तथा उस समय की परिस्थितियों के विषय में अंदाजा लगाया जा सकता है। दूधनाथ सिंह का कथा साहित्य इसी दृष्टि से भी पूर्णतः सफल है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, दूधनाथ, गुप्तदान, पृ.स.53
2. सिंह, दूधनाथ, उत्सव, पृ.सं.9
3. सिंह, दूधनाथ, उत्सव, पृ.सं.57
4. सिंह, दूधनाथ, गुप्तदान, पृ.स.80
5. सिंह, दूधनाथ, निष्कासन, पृ.स.139
6. सिंह, दूधनाथ, आखिरी कलाम, पृ.स.363
7. सिंह, दूधनाथ, आखिरी कलाम, पृ.स.381
8. सिंह, दूधनाथ, आखिरी कलाम, पृ.स.25
9. डॉ. शुभलक्ष्मी, राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में राजनीति, पृ.सं.108
10. सिंह, दूधनाथ, रेत, पृ.स.27
11. सिंह, दूधनाथ, धर्मक्षेत्र–कुरुक्षेत्रे, पृ.स.128

*****